

जै धुनि छाई (८९)

मन मस्त भया शुभ दिन आया आज गावो वाधाई साई की।
फूली दिल की कली भई बात भली

आज गावो वाधाई साई की॥

आज धरणि आकाश भी नाच उठा

बन वृक्ष लता सब नाच रहे
नाचे सुर सरिता और विहंग भी सब प्रेम महा रस राच रहे
धीर समीर सुगंधि ले आई आज गावो वाधाई साई की॥

यह दुनिया एक अजीब चमन है यहां रंग बिरंगे फूल हैं
खिले

वह खूबसूरत हो तब महके जब लाइक उनको माली मिले
आई साई चमन में बहार है आज गावो वाधाई साई की॥

सींच सींच हरी नाम पानी से पौधे सब सर सब्ज किए
जो मारे खिजां मुरझाए गए तिन को जीवन दान दिए
कुरबान जाऊं साई आवन पर आज गावो वाधाई साई की॥

चन्द्र वदन चमकीले साई देखि मगन भए नर नारी
फूले फिरें चहूं ओर बसे कहि कहि लालन की बलहारी
सब दें आशीश चिरु जीवो लला आज गावो वाधाई साई
की॥

धन्य जनक जननी जिनि जाए महापुरुष प्रभू मुकुट मणी
जांकी कीरति गावत हैं नितु नारद शारद सहस फणी
देव गगन सें पुष्प वर्षा करें आज गावो वाधाई साई की॥

मुस्कान मनोहर लालन की प्रेम सुधा का दान करे
किलकत किलकत कुंवर कहे जै राम हरी जै कृष्ण हरी
नभ धरणि में जै धुनि छाई आज गावो वाधाई साई की॥

मिट गए अंधेरे अविद्या के जब साई सूरज प्रकाश हुए
चिन्ता सब की चूर हुई अरु हृदय मांह हुलास भए
सर नाचें गावें मोद भरे आज गावो वाधाई साई की॥

जन्म जन्म बनूं चरण चेरी मैगसि चंद्र प्यारे की
करे रक्षा नितु जगदीश हरी लाल प्राण प्यारे हमारे की
प्रेम सम्पति में भरपूर रहे आज गावो वाधाई साई की॥